CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 09th April 2021, Revised on 15th April 2021, Accepted 17th April 2021

आलेख

21वीं सदी की नारी

* डॉ. संगीता
सहायक आचार्य
श्रीमती कुनणी देवी महिला महाविद्यालय, नवलगढ़
Email: mahalamahaveer7@gmail.com
Mob. No. 7726917750, 8005870319

मुख्य शब्द– *परिवार, समाज, राष्ट्र, सुखमय माहौल आदि।*

सार संक्षेप

नारी के कोमल मन को जितना महत्व व सम्मान दिया जायेगा उतना ही वह स्वयं को अधिक स्वतंत्र महसूस करेगी। स्वतंत्रता अर्थात भारहीनता ये शब्द ऐसे है जो इंसान को अत्यधिक आत्मविश्वासी बनाते है और जो भी कार्य पूर्ण लगन व आत्मविश्वास के साथ किया जाता है, उस कार्य में सफलता इंसान के कदम चूमती है। एक सफल व सशक्त नारी से ही परिवार, समाज व राष्ट्र की प्रगति सम्भव है। हर महान व्यक्ति के पीछे स्त्री का हाथ रहा है। हमेशा से यही चर्चा का विषय रहा है कि आज के बच्चे कल देश का भविष्य बनेंगे। उन बच्चों को कैसे माहौल की आवश्यकता है वे सब बातें आज भी नारी समझती है। वह अपने बच्चों की परवरिश के लिए सुन्दर, स्वस्थ व सुखमय माहौल बनाये रखना चाहती है, ताकि बच्चे भी उन्हीं बातों को या व्यवहार को अपने आचरण में उतार सके।

परिचय

साहित्य समाज का दर्पण है। इस बात को प्राचीन साहित्यकारों ने साहित्य में सिद्ध कर दिया है। इसी प्रकार यदि ऐसा कहा जाये कि स्त्री परिवार का दर्पण होती है तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि यदि किसी परिवार या कबिले की स्थिति को देखना है तो वहां की नारियों की स्थिति को देखकर पता लगाया जा सकता है कि वह परिवार कितना सभ्य, सुसंस्कृत व उच्च विचारों का हैं। नारी के कोमल मन को जितना महत्व व सम्मान दिया जायेगा उतना ही वह स्वयं को अधिक स्वतंत्र महसूस करेगी। स्वतंत्रता अर्थात भारहीनता ये शब्द ऐसे है जो इंसान को अत्यधिक आत्मविश्वासी बनाते है और जो भी कार्य पूर्ण लगन व आत्मविश्वास के साथ किया जाता है, उस कार्य में सफलता इंसान के कदम चूमती है। एक सफल व सशक्त नारी से ही परिवार, समाज व राष्ट्र की प्रगति सम्भव है।

आज 21वीं सदी तक आते–आते शिक्षित नारी यह समझ चुकी है कि उसकी स्वयं की सफलता पर ही बच्चों की परवरिश व परिवार, समाज व राष्ट्र की प्रगति सम्भव है। हर महान व्यक्ति के पीछे स्त्री का हाथ रहा है। हमेशा से यही चर्चा का विषय रहा है

कि आज के बच्चे कल देश का भविष्य बनेंगे। उन बच्चों को कैसे माहौल की आवश्यकता है वे सब बातें आज भी नारी समझती है। वह अपने बच्चों की परवरिश के लिए सुन्दर, स्वस्थ व सुखमय माहौला बनाये रखना चाहती है, ताकि बच्चे भी उन्हीं बातों को या व्यवहार को अपने आचरण में उतार सके। इसके अलावा आज की नारी घर में बड़े–बूढ़ों की सेवा–पानी के अलावा अपने पति की आर्थिक मदद में भी हाथ बटाना चाहती है। क्योंकि इस बात से वह परिचित है कि घर–परिवार में सुख–समृद्धि लाने के लिए आर्थिक स्थिति का भी मजबूत होना आवश्यक होता है। जिसे दो समय की रोटी नसीब नहीं होती वे लोग नैतिकता, सभ्यता, संस्कृति आदि किसी भी प्रकार का ख्याल नहीं रख सकते। अतः अपने घर परिवार को सभी प्रकार से व्यवस्थित रखने का कार्यभार भी आज की नारी अपने ऊपर ढोकर चलती हैं क्यांकि इन सबको जितना व्यवस्थित नारी कर सकती है, उतना पुरूष नहीं।

सामान्य व्यवहार में देखा जाये तो यदि घर में स्त्री स्वयं बीमार पड़ जाती है या बच्चे, बुजुर्ग कोई भी बीमार हो जाते है तो उसके खाने–पीने, दवा–पानी, रहने–सहने की जितनी व्यवस्था एक स्त्री देख सकती है, उतनी पुरूष नहीं देख सकता है। अगर वह देखता भी है तो हर चीज की व्यवस्था या देखभाल स्त्री के जैसे नहीं कर सकता है। स्त्री कामकाजी या नौकरी–पेशे वाली होकर भी अपनी घर–गृहस्थी को अच्छी प्रकार से सम्भाल लेती है। कई बार जब सोचने बैठते है तो दिमाग में ये बाते आ जाती है कि जब एक स्त्री कमाने के साथ–साथ घर गृहस्थी का कार्य भी सुचारू रूप से कर लेती है तो पुरूष इन कार्या में पीछे क्यों रह जाता है। वास्तव में विधाता ने नारी को पुरूष की बजाय अत्यधिक सशक्त बनाया है। पुरूष केवल घर के बाहर या नौकरीपेशा ही कर सकता हैं अन्य कार्य नहीं। यदि स्त्री का कोमल मन पुरूष जैसा कठोर बन जाये तो आज की स्त्री जिन्दगी में अटकने वाली नहीं।

21वीं सदी की कामकाजी स्त्री आज पुरूष से कई कदम आगे निकल चुकी है अर्थात बड़े–बड़े साहसपूर्ण कार्य कर चुकी है। यहां तक कि वर्तमान में नारी चाँद पर भी पहुँच गयी है अर्थात चाँद पर पहुंचने वाली स्त्री कल्पना चावला का नाम तो कोई नहीं भूलेगा। वहीं दूसरी ओर नारी देश के उच्च पदों पर भी आसीन रह चुकी हैं। हमारे देश के राष्ट्रपति पद पर रह चुकी प्रतिभा पाटिल भी एक नारी ही थी। किन्तु यदि उनका मन टटोला जाये तो वहाँ भी एक कोमल स्त्री मन मिलेगा, यद्यपि पुरूष को आगे बढ़ाने में नारी का हाथ होता है किन्तु अधिकांश पुरूष इस बात को स्वीकार नहीं करते व स्वयं की मेहनत व जज्बे से आगे बढ़ने की बात करते है। किन्तु एक नारी अपनी स्वयं की प्रगति में पुरूष का हाथ मानती है। आज नारी चाहे कितनी भी पढ़–लिख ली हो। वह चाहे डाक्टरेट, इंजीनियरिंग जैसी बड़ी–बड़ी डिग्रीया हासिल कर चुकी हो किन्तु वह जहाँ भी कहीं जाती है या कार्य करती है तो वह पुरूष का साथ चाहती है। स्त्री अपनी सफलता का श्रेय भी पुरूष को ही देती है। प्राचीन काल से यह चर्चा का विषय बना रहा है कि बेटी को उच्चश्रंखल बनाना तो आसान है पर साथ–साथ माता–पिता को यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि बेटी की उच्चश्रंखल व स्वतंत्रता हमारी शर्मींदगी का कारण न बन जाये। एक बेटी यह शिक्षा अपने माता–पिता से ही लेकर आती है कि उसे आधुनिक तो बनना चाहिए किन्तु इसके साथ–साथ उसे अपनी सभ्यता व संस्कृति का ख्याल भी रखना चाहिए। यही कारण है कि वह शादी से पहले पिता या भाई का साथ चाहती है तो शादी के बाद पति का साथ चाहती है। तभी वह समाज में सभ्य कहलाती है। समय–समय पर होने वाले अध्ययन बताते है कि आधुनिक नारी खासतौर पर भारतीय महिलाएं घर पर अपनी जिम्मेदारियां निभाने में आगे हैं। उन्हें अपने बचपन के स्वप्नों को साकार करने के लिए आज भी नारी के पास यदि उच्च स्तरीय पेशा (रोजगार) नही है तो भी वह घरेलू पेशा जैसे कढ़ाई, सिलाई, बुनाई आदि कार्य कर अपनी आर्थिक स्थित को सुधार कर अपने सपने साकार करने में लगी रहती है।

आज की नारी के सशक्त होने का मुख्य कारण उसके हृदय में कई सदियों पुराना भरा हुआ विस्फोट है। जिस प्रकार ज्वालामुखी फटने से पहले धरती के अन्दर ढेर सारी रासायनिक अक्रियाएं चलती रहती है। उसी प्रकार नारी का मन सदियों से विपन्नताओं व विषमताओं से भरा हुआ है जो 21वीं सदी तक आते–आते प्रस्फुटित हुआ। जिसके कारण समाज में आज इतने ज्यादा बदलाव आये है कि समाज विकास की ओर अग्रसर हो उठा।

इस प्रकार 21वीं सदी की स्त्रियों ने सफलता के विभिन्न आयामों को छुआ हैं वह जीवन के हर एक क्षेत्र में अपनी कामयाबी का परचम लहराते हुए पुरूषों को चुनौती देती नजर आ रही हैं अपनी कड़ी मेहनत के बल पर उसने स्वयं का अस्तित्व बनाया हैं आज भी स्त्री समाज में चली आ रही प्राचीन परम्पराओं व रीति रिवाजों के खोल को तोड़कर उनमें से योग्य रिवाजो को ग्रहण कर व

विकास के नये आयामां को समाविष्ट करने में जुटी है। आज वह परम्परा के नाम पर किसी भी प्रकार का दमन व शोषण सहन नहीं करती है। वह अपने अधिकारों व कर्तव्यों को लेकर जागरूक हो गई हैं जिनकों ध्यान में रखकर व सभ्य व सुस्संकृत बनकर घर–परिवार में अपनी पूर्णतया भूमिका निभा रही है।

यदि नारी के पीछे पुरूष का हाथ व साथ रहा तो आज की नारी परिवार व समाज को बनाने मं और ज्यादा बेहतर परिणाम देती नजर आयेगी।

संदर्भ सूची

1. रोहिणी अग्रवाल स्त्री लेखनः स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
2. शोभा बेरेकर, नारी विमर्श, अभय प्रकाशन, कानपुर, 2010
3. मैत्रेयी पुष्पा, गुडिया भीतर गुड़ियाः राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010
4. सीमोन बोडबा, 'द सेकंड सेक्स' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010
5. मैत्रयी पुष्पा के साहित्य में नारी चेतना, international Journals of A.R. ISSN Print 2394-7500, online 2394-56869

**** Corresponding Author***

डॉ. संगीता

सहायक आचार्य

श्रीमती कुनणी देवी महिला महाविद्यालय, नवलगढ़

Email: mahalamahaveer7@gmail.com

Mob. No. 7726917750, 8005870319